पाठ 22. बोलने वाली रज़ाई

पाठ का उद्देश्य

ज़रूरतमंदों की सहायता करना तथा उनसे प्रेम-सहानुभूति रखना एक मनुष्य को श्रेष्ठ बनाता है। प्रस्तुत पाठ बच्चों को मानवीयता के गुणों की परख करने तथा उन्हें अपने जीवन में अपनाने के उद्देश्य से दिया गया है।

पाठ का सारांश

एक सराय का मालिक चटाइयाँ, रज़ाइयाँ आदि कबाड़ी की दुकान से खरीदता है। कपड़ों का व्यापारी उस सराय का पहला ग्राहक बनता है। जैसे ही वह आराम करने के लिए जाता है तो उसे रज़ाई में से दो आवाज़ें सुनाई देती हैं। वह सराय छोड़कर चला जाता है। दूसरे ग्राहक एक दर्ज़ी के साथ भी यही घटना घटती है। सराय का मालिक परेशान होकर कबाड़ी के पास जाता है। वह कई दुकानों से होता हुआ, अंत में एक मकान-मालिक के पास पहुँचता है। मकान-मालिक से पता चलता है कि वह रज़ाई एक किरायेदार की थी। किरायेदार के परिवार में चार सदस्य थे। किरायेदार और उसकी पत्नी की मृत्यु हो चुकी थी। उसके दोनों लड़कों से किराया वसूलने के लिए मकान-मालिक ने वह रज़ाई उनसे ले ली थी। जिस कारण दोनों लड़के ठंड से ठिठुरकर मर गए। उस रज़ाई में से उन्हीं दोनों भाइयों की आवाज़ें आ रही थीं। सभी को यह जानकर बड़ा दुख होता है। जब रज़ाई को उन दोनों बच्चों की कब्र पर ओढ़ा दिया गया तब रज़ाई में से आवाज़ें आनी बंद हो गईं।

अध्यापन संकेत

पाठ का आदर्श वाचन करें। बच्चों से पाठ का मौन पठन करवाएँ। कठिन शब्दों का अर्थ बताएँ तथा पाठ के महत्वपूर्ण अंशों का सरलीकरण करके समझाएँ। पाठ में निहित जीवन-मूल्यों को बच्चों में विकसित करें।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- ❖ पूछें, यह पाठ क्या शिक्षा दे रहा है?
- ❖ तुम्हारी दृष्टि में मनुष्य का एक-दूसरे के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए? हमारे अंदर मनुष्यता का बोध होना कितना ज़रूरी है?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।